RNI NO HARHIN/2017/72144

मूल्य 80 रूपए

यात्रा आमंत्रण

फरवरी - अप्रैल 2024

भारत की एक मात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका



अविस्मरणीय मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के सभ्यता और संस्कृति पर विशेष अंक













भारत की सबसे बड़ी चित्रकला कार्यशाला

वसुधैव कुटुम्बकम

WILL INDIA CHANGE FOUNDATION







भारत के 82 दिग्गज विद्यालय में आयोजित हुआ

22 हज़ार विद्यार्थीओ ने भाग लिया जिसमे कक्षा तीसरी से आठवीं के छात्र शामिल थे

भारत के 32 टॉप कला जगत के मेंटर शामिल हुए

चार राज्य और नौ शहर में आयोजित हुआ जिसमे शामिल रहे नागपुर , सूरत , ग्वालियर , इंदौर , भोपाल , औरंगाबाद , सांगली , बेंगलुरु और मैसूरु

69 दैनिक अखबार में प्रकाशित हुआ समाचार जिसमे शामिल है हिंदी , अंग्रेजी , मराठी, गुजरती और कन्नड़ भाषा

युवा जो नवनीत एजुकेशन का ब्रांड है ने प्रस्तुत किया।

विल इंडिया चेंज फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया गया





वसुधैव कुटुम्बकम हम देखेंगे तो पूरी धरा , पृथिवी , आकाश , पांच तत्व यह सब एक कुटुंब है , इसी कुटुंब को सुरक्षित रखना है। अगर हमारा कुटुंब अगर संघटित है तो प्रकृति भी हमारे साथ आ जाएगी।
शुभा वैदय

बच्चो ने वसुधैव कुटुम्बकम कार्यशाला में बढ़ चढ़ के भाग लिया है और तीन दिन में कैसे नौ स्कूल पुरे हुए पता ही नहीं चला। सबको एक साथ ही रहना है एक परिवार जैसा , यह सबसे अच्छी बात रही।
मंजुनाथ ए आर





औरंगाबाद कार्यशाला में मुझे पर्ल अकादमी में सबसे अलग अनुभव मिला। पूरा पृथिवी एक परिवार इस का मतलब समझाया और इसका मतलब समझ के बच्चो ने काफी खूबसूरत चित्रकारी की।
माधुरी सुदा



हमने भोपाल कार्यशाला में दो हज़ार बच्चो के संग अपने अनुभव साझा किये जिसमे यह बताया की युवा के चित्रकारी सामग्री से कैसे चित्र बनाये जा सकते है। और इस बार विषय था वसुधैव कुटुम्बकम।
प्रीती जैन



युवा ने बच्चो को चित्रकारी के सामग्री दिए , जिस से बच्चो ने खूबसूरत चित्र बनाये। और यह सब बच्चो के लिए सिखने योग्य बाते रही।
इंदु राव



यह हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था. स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि विद्यार्थी शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है और वसुधैव कुटुम्बकम जैसा विषय इस बात को और ताकत देता है।
गणेशन हेगड़े

सफलता के मधुर पल तस्वीरो की जुबानी












संपादकीय

8
भीमबेटका गुफा

16
पश्चिम बंगाल में घूमने लायक 10 जगहें

11
केशव मंदिर, सोमनाथपुरा



हमारी संस्था विल इंडिया चेंज फाउंडेशन ने नवनीत एजुकेशन के युवा ब्रांड के साथ मिलके भारत की सबसे बड़ी चित्रकला कार्यशाला " वसुधैव कुटुंबकम" आयोजित की जिसमे भारत के नौ शहरों के 82 सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के बाइस हज़ार विद्यार्थीओ ने भाग लिया। पूरा संसार एक परिवार इस सामाजिक सन्देश का प्रचार और प्रसार हमने छात्रों के समक्ष किया। हमे फक्र है की हमारी संस्था के इस ऐतिहासिक कार्य को देश के 65 दैनिक अखबार ने प्रकाशित किया।मेरी पत्रिका के पहले चार पन्ने मेरे इसी उपलब्धि को समर्पित है। साथ ही इस कार्यशाला के आयोजन में मैंने यात्रा की मध्य प्रदेश की , महाराष्ट्र की और कर्णाटक की। और इसी दौरान मुझे अवसर प्राप्त हुआ कुछ अति महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मंदिरो , दुर्ग और क़िलों के भ्रमण का। तो इस अंक में मैं साँझा कर रहा हु मेरी सफलता और मेरी यात्रा के गौरव पल आपके समक्ष। यह पल है उल्लास का , प्रोत्साहन का , अनुभव का और वैचारिक समायोजन का। यह समय है सार्वभौमिक एकता और सामाजिक प्रतिबद्धता का। और मेरे विचार से जब हम पुरे संसार को एक मानेगे तभी हम सामाजिक समरसता और गतिशील समाज की परिकल्पना को साकार कर पाएंगे।

विश्वदीप रॉय चौधुरी
संपादक

Editor
Biswadeep Roychowdhury

Advisor
Gaur Kanjilal

Senior Correspondent
Suhasini Sakir

Uttar Pradesh Bureau Chief
Pratap Singh

Sangli Correspondent
Ganesh Anil Ghunte
Tejas Sangar

Delhi Team
Kapil Attri
Deepak Sharma
Shankar singh koranga
Bhawana Attri

Europe Correspondent
Chetan Vadher

Social Media Postproduction
Vikrant Ranjan

Address : 189/10, sector 1. charkop, kandivali west, Mumbai -61

Follow us at
yatramantran

Visit us at
www.yatramantran.com
www.willindiachange.org

Mail us at
yatraamantran@gmail.com

Subscribe our You tube channel
Yatra Aamantran

Special thanks to
Madhya Pradesh Tourism
karnataka Tourism





प्रताप सिंह और सुहासिनी - संवादाता

महादेव को समर्पित बटेश्वर हिन्दू मंदिर

अगर आपके पास निजी वाहन है या आप पुरे दिन के लिए वाहन किराये पर लेते है तो आपके लिए बटेश्वर हिन्दू मंदिर की यात्रा सुगम हो जाएगी। ग्वालियर से एक घंटे की यात्रा के बाद आप दो सौ मंदिर के उस प्रागण में सवयं को पाते है जो आपको विस्मृत और हैरान कर देगा। सनातन सभ्यता की विशालता और व्यपकता का प्रतिक यह मंदिर हमारे इतिहास के गौरव गाथा की कहानी सुनाता है। यह मंदिर हमारे पूर्वजो के वास्तुशिल्प के प्रति अद्भुत प्रतिभा को हमारे समक्ष रखता है। इस मंदिर की यात्रा से आप सनातन के महान विरासत को करीब से अनुभव कर पाएंगे।

ऐसा माना जाता है कि 25 एकड़ के क्षेत्र में भगवान शिव, विष्णु और शक्ति को समर्पित लगभग 200 मंदिर हैं। माना जाता है कि बटेश्वर नाम भगवान शिव के दूसरे नाम भूतेश्वर से लिया गया है।

पुरातात्विक खोजों के अनुसार, इन मंदिरों का निर्माण चौथी शताब्दी के आसपास हुआ था।.



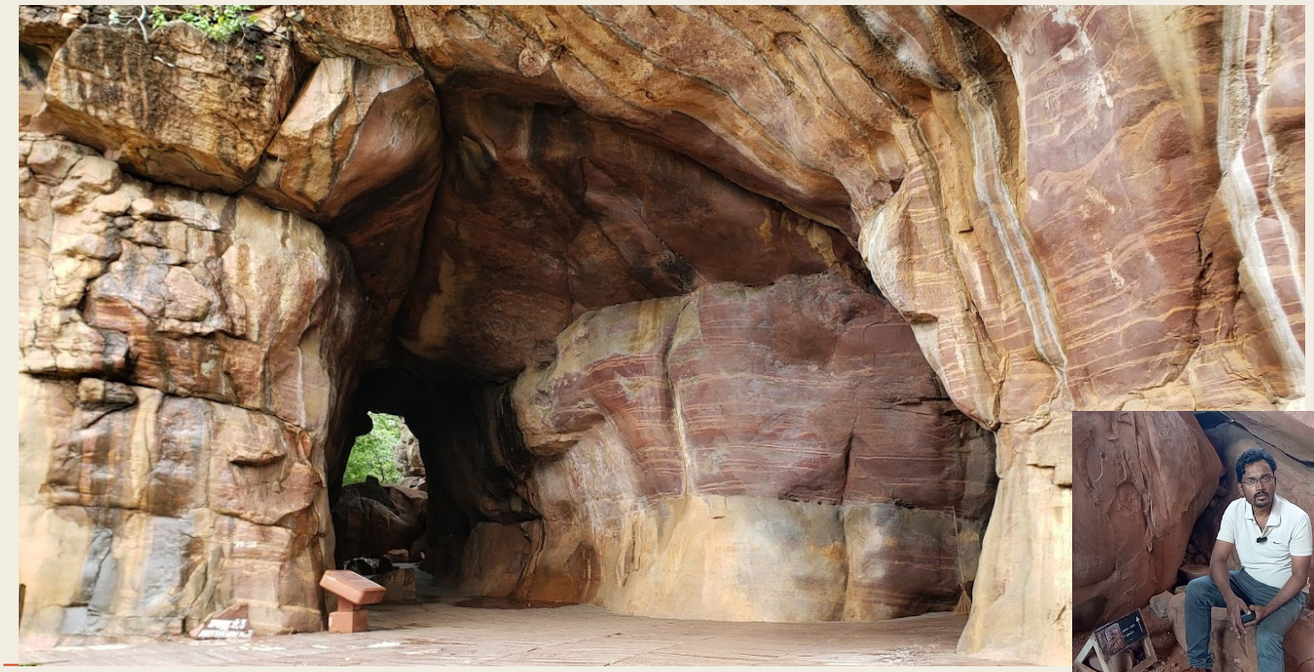
लेकिन कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि इनका निर्माण 7वीं और 10वीं शताब्दी के बीच हुआ था। मध्य प्रदेश के पुरातत्व निदेशालय के अनुसार, गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासनकाल में २०० मंदिरों का यह समूह बनाया गया था। कला इतिहासकार और भारतीय मंदिर वास्तुकला में विशेषज्ञ प्रोफेसर माइकल मीस्टर के अनुसार, ग्वालियर के पास बटेश्वर समूह के प्रारंभिक मंदिर 750 -800 ईसवी के होने की संभावना है। कनिंघम के विवरण के अनुसार एक अभिलेख पर सम्वत् 1107 अंकित था।

गर्ड मेविसेन के अनुसार, बटेश्वर मंदिर परिसर में कई दिलचस्प शिलाखंड हैं, जैसे नवग्रह , कई वैष्णववाद परंपरा के दशावतार (विष्णु के दस अवतार), शक्तिवाद परंपरा से सप्तमातृक (सात माताओं) की प्रदर्शनी ।मेविसेन के अनुसार मंदिर परिसर 600 ईस्वी के बाद के होना चाहिए। साइट पर ब्रह्मवैज्ञानिक विषयों की विविधता बताती है कि बटेश्वर (जिसे बटेसरा भी कहा जाता है) ,कभी ये क्षेत्र मंदिर से संबंधित कला और कलाकारों का केंद्र था।

केके मुहम्मद ने निर्भय सिंह गुज्जर के बारे में और मंदिर के पुनर्निर्माण में एएसआई के साथ उनके और उनके साथियों के सहयोग के बारे में बात की।

परमाइकल मीस्टर के अनुसार, बटेश्वर स्थल मध्य भारत में "मंडपिका मंदिर" अवधारणा के संकल्पना और निर्माण को दर्शाता है।[7]ये मंदिरों में एक "साधारण स्तम्भ वाली दीवार होती है जो एक व्यापक, समतल -धार वाले शामक के सबसे ऊपर होती है जो प्रवेश द्वार से लेकर पवित्र स्थान ,गर्भ गृह ,के आसपास फैली हुई होती है।

तीन लाख साल पुरानी मानव इतिहास की गवाही देती भीमबेटका गुफा





भीमबेटका की विशाल गुफाएँ मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 45 किमी उत्तर पूर्व में स्थित हैं। भोपाल-होशंगाबाद राजमार्ग के किनारे स्थित, ये गुफाएँ रायसेन जिले के भियापुरा गाँव के निकट हैं। घने जंगलों, चट्टानी इलाकों और हरी-भरी हरियाली के बीच स्थित यह ऊंची प्राचीन चट्टानेंपास के एक छोटे से शहर ओबैदुल्लागंज से भी एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

इतिहास की महानतम खोज जो अकस्मात् ही हुआ उनमे से एक है भीमबेटका की गुफाओं की खोज जो 1957-58 में हुई थी। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के एक निडर पुरातत्वविद्, डॉ. विष्णु वाकणकर रास्ता भटक गए थे और खुद को इस प्रागैतिहासिक खजाने के बीच पाया। समय के साथ, पुरातात्विक खुदाई में निम्न पुरापाषाण युग यानि वह समय जब पत्थर के औजारों की शुरुवात हुई थी से लेकर प्रारंभिक मध्ययुगीन युग जो 600 – 1300 सीई का समय है , तक के अवशेष यहाँ प्राप्त हुए है।

किंवदंती की माने तो भीमबेटका नाम महाभारत के 'भीमबैठका' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'भीम का बैठने का स्थान' .

मेरे लिए इस स्थान की यात्रा में सबसे हैरान करने वाला विषय कप्यूल्स रहे। भीमबेटका कप्यूल्स ब्लाम्बोस गुफा कला से चार गुना पुराने हैं, जो पाषाण युग की कला का अगला सबसे पुराना स्थल है। सबसे पुरानी ज्ञात प्रागैतिहासिक कला 1990 के दशक के दौरान भारत में दो प्राचीन क्वार्टजाइट गुफाओं में खोजी गई, ऑडिटोरियम गुफा और दाराकी-चट्टान। बता दे की क्वार्टजाइट पत्थर बलुआ रेट की सबसे मजबूत चट्टान होती है।इस गुफा कला में कई कप्यूल्स शामिल हैं - जो अर्धगोलाकार कप के आकार के होते है जो चट्टान की सतह से बाहर निकले हुए दीखते है । प्रसिद्ध पुरातत्वविदों बेदनारिक, कुमार और अन्य द्वारा प्रागैतिहासिक स्थलों की भूवैज्ञानिक जांच से यह स्थापित हुआ है कि यह रॉक कला निचले पुरापाषाण युग की एच्यूलियन संस्कृति से पहले की है, और इसलिए कम से कम 290,000 ईसा पूर्व की होनी चाहिए। पर इनको किसने और क्यों बनाया यह अभी भी बड़ा सवाल है। यह न तो मानव निर्मित लगता है और न प्रकति द्वारा। फिर क्या यहाँ पर कभी एलियंस का आना जाना रहा। यह गहरे सवाल इन गुफाओ को रोमांचक बनाता है।

यहाँ की गुफाओ में हज़ारो साल पहले की चित्रकारी देखने को मिल जाएगी जिनमे जानवरों के अलावा, मानव आकृतियाँ और शिकार के दृश्य भी हैं जो उस समय इस्तेमाल किए जाने वाले हथियारों की स्पष्ट तस्वीर देते हैं। इनमें कांटेदार भाले, नुकीली लाठियाँ, धनुष और तीर शामिल थे। इस श्रेणी में सामुदायिक नृत्य, पक्षी, माँ और बच्चे, गर्भवती महिलाएँ, मृत जानवर ले जाते पुरुष और तो और शराब पीते मानव तक के चित्रण देखने को मिलता है। इन चित्रकलाओं के अध्ययन से प्रागैतिहासिक मनुष्य की गतिविधियों, उसके पहनावे, जानवरों और तत्कालीन दैनिक जीवन के कई अन्य पहलुओं की दुर्लभ झलक मिलती है।

भीमबेटका अतीत के अवशेषों का घर है, जैसेइस क्षेत्र में मौर्य/शुंग काल में बौद्ध प्रभाव का संकेत देने वाले छोटे स्तूप दीखते है , इसके अलावा बौद्ध भिक्षुओं के लिए चट्टानों को काटकर बनाए गए बिस्तर भी हैं। यहां विभिन्न शिलालेख हैं, जो शुंग, कुषाण, गुप्त काल के हैं। शंख लिपि के शिलालेख, जो अब तक समझे नहीं जा सके, भी आम भी तौर पर देखे जाते हैं। परमार काल से संबंधित मंदिर के कुछ वास्तुशिल्प भी यहाँ देखे गए हैं।

चौसठ योगिनी मंदिर , अद्भुत वास्तुशिल्प की प्रतिमूर्ति



मध्यप्रदेश की यात्रा के दौरान मेरी सबसे ज्यादा रूचि चौसठ योगिनी मंदिर देखने की थी। इस मंदिर को लेकर कई तरह की कहानिया है और कई तरह के किस्से है। हलाकि यह मंदिर मुख्य पर्यटन स्थल के रूप में तो चिन्हित नहीं है पर इसके प्रति उत्सुकता के कारन पर्यटक यहाँ खींचे चले आते है। मैं चौसठ योगिनी मंदिर के विषय में काफी कुछ पढ़ चूका था और उसी का अनुभव करने यहाँ के दौरे पर था। चौसठ योगिनी वास्तुकला 9वीं और 11वीं शताब्दी के दौरान निर्मित मंदिर वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली है।

भारतीय मंदिर परंपरा में चौसठ योगिनी वास्तुकला का महत्व ब्रह्मांडीय ऊर्जा और शिव और शक्ति के बीच गतिशील संबंध के प्रतिनिधित्व में निहित है। योगिनियों को दिव्य स्त्रीत्व के शक्तिशाली और उग्र पहलुओं के रूप में दर्शाया गया है, जो अक्सर तांत्रिक प्रथाओं और अनुष्ठानों से जुड़ी होती हैं।

इस पवित्र भवन का इतिहास कच्छपघाट राजवंश के राजा देवपाल के युग से जुड़ी हैं।

मध्यप्रदेश का प्राचीन चौसठ योगिनी मंदिर गोलाकार है और इसमें *64* कमरे हैं। इन सभी *64* कमरों में भव्य शिवलिंग स्थापित है। यह मंदिर मुरैना जिला मुख्यालय से करीब *30* किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

इन मंदिरों में 64 योगिनियों (योगाभ्यास करने वाली महिला) के लिए स्थान हैं, इसलिए इन्हें चौसठ योगिनी मंदिर कहा जाता है। ये मंदिर आमतौर पर शिव या भैरव को समर्पित हैं, जिन्हें प्रांगण के केंद्र में रखा गया हैयोगिनियों को दिव्य स्त्रीत्व के शक्तिशाली और उग्र पहलुओं के रूप में दर्शाया गया है, जो अक्सर तांत्रिक प्रथाओं और अनुष्ठानों से जुड़ी होती हैं।

। 1055 और 1075 ईस्वी के बीच, उनके शासनकाल के दौरान इस मंदिर का निर्माण हुआ ऐसा 1323 ईस्वी केएक शिलालेख से पता चलता है जो इस विस्मयकारी मंदिर के निर्माण की पुष्टि करता है। चौसठ योगिनी मंदिर भारत की गहन आध्यात्मिक विरासत के लिए एक जीवंत प्रवेश द्वार के रूप में खड़ा है,



भारतीय मंदिर परंपरा में चौसठ योगिनी वास्तुकला का महत्व ब्रह्मांडीय ऊर्जा और शिव और शक्ति के बीच गतिशील संबंध के प्रतिनिधित्व में निहित है। मंदिर का गोलाकार आकार समय की चक्रीय प्रकृति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक है। योगिनियों को शक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है, जो शिव से निकलती हैं और उन्हें एक सुरक्षा घेरे में घेर लेती हैं। योगिनियाँ मानव व्यक्तित्व, भावनाओं, इच्छाओं और शक्तियों के विभिन्न पहलुओं का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

समय से परे अद्भुत मंदिर वास्तुशिल्प केशव मंदिर



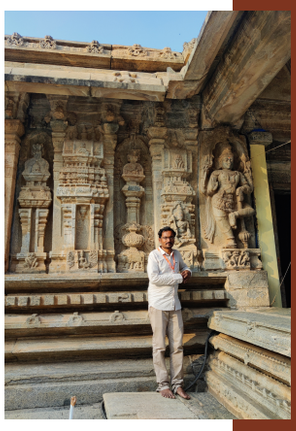


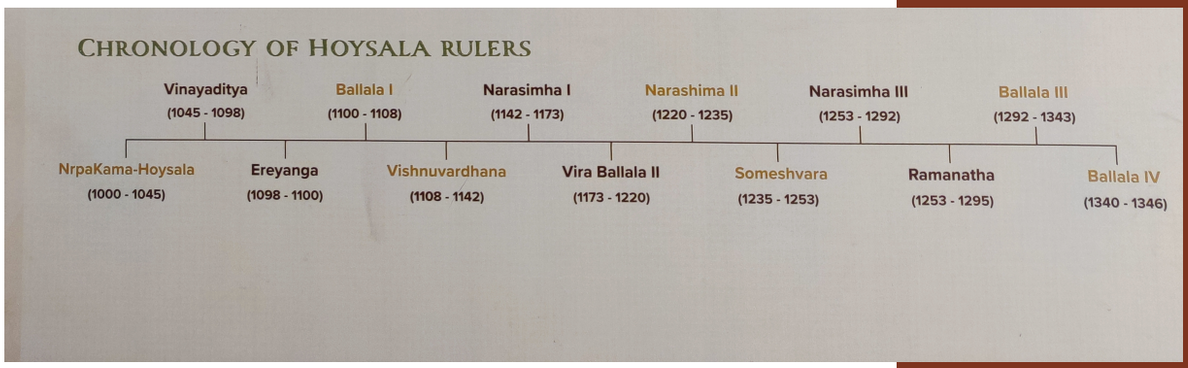
केशव मंदिर का निर्माण 1268 ई. में तत्कालीन होयसल राजा नरसिम्हा तृतीय से धन प्राप्त करने के बाद सोमनाथ दंडनायक ने करवाया था। शिस्ट पत्थर का यह मंदिर एक आयताकार प्रांगण के मध्य में बना है। यह एक प्राकार दीवार से घिरा हुआ है और इसमें 56 छोटे मंदिर हैं जिनमें कभी देवता रहते थे। भगवान विष्णु को समर्पित यह त्रिकुटा मंदिर पूर्व दिशा की ओर है। मंदिर में सीढ़ियों की श्रृंखला के माध्यम से प्रवेश किया जाता जिसमे द्वारपाल द्वार पर खड़े दिखाई देते है । पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के तीन गर्भगृहों में क्रमशः केशव, जनार्दन और वेणुगोपाल की छवि है।

मंदिर एक ऊंचे तारामंडल (जगती) पर बनाया गया है और यह मंदिर की योजना की रूपरेखा का अनुसरण करता है। मंदिर की बाहरी दीवारें अत्यधिक अलंकृत हैं। मंडपों के बाहरी हिस्से में छठे स्तर के चित्रकारी से युक्त अधिष्ठान है और इनके ऊपर मूर्तिकला पैनलों और जालीदारकक्ष बनाये गए हैं।

मंदिर एक ऊंचे तारामंडल (जगती) पर बनाया गया है और यह मंदिर की योजना की रूपरेखा का अनुसरण करता है। मंदिर की बाहरी दीवारें अत्यधिक अलंकृत हैं। मंडपों के बाहरी हिस्से में छठे स्तर के चित्रकारी से युक्त अधिष्ठान है और इनके ऊपर मूर्तिकला पैनलों और जालीदारकक्ष बनाये गए हैं।

मुखमंडब और नवरंगा के बीच का संक्रमण स्थान दो श्रीकार और दो 32 नुकीले इंद्रकांत के संयोजन से परिभाषित होता है। होयसल कलाकार की प्रतिभा मंदिर के आंतरिक भाग, विशेष रूप से छत और स्तंभों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।







विभिन्न प्रकार की सपाट और घरेलू छतें हैं, जो वर्गाकार या आयताकार या अष्टकोणीय आधारों के अनुरूप बनी हुई हैं। ये छतें लकड़ी की छत के पैटर्न से काफी प्रभावित हैं और यहां के कलाकारों ने पत्थर में लकड़ी के समान कार्य करते हुए एक महान वास्तुशिल्प का परिचय दिया है।



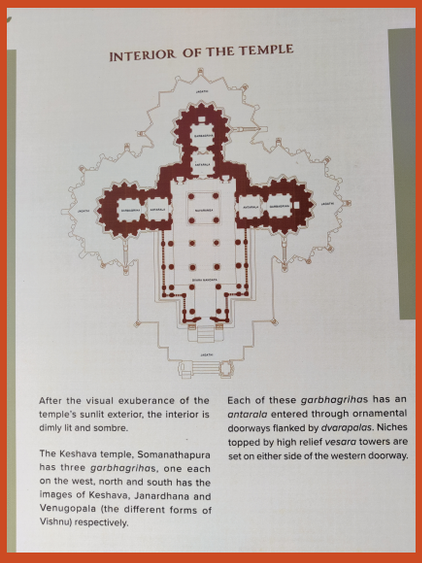


होयसला 11वीं शताब्दी के मध्य में सत्ता में आया और 14वीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया। उनका साम्राज्य उत्तर से दक्षिण तक 500 किलोमीटर तक फैला हुआ था, जिसमें कर्नाटक का अधिकांश भाग शामिल था। होयसल का उदय दक्षिणी कर्नाटक के 8वीं से 11वीं शताब्दी के शासक गंगा के पतन के साथ हुआ। होयसल की शुरुआत दक्षिणी पश्चिमी कर्नाटक के एक छोटे से शहर अंगडी में हुई। यहां से वे बेलूर के महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग पर चले गए और फिर हेलेडिडु। होयसला ने 200 से अधिक वर्षों तक दक्षिणी दक्कन के अधिकांश भाग पर शासन किया। 11वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में चालुक्य शक्ति कमजोर होने के कारण, प्रारंभिक होयसल शासक विनयादित्य और एरेयंगना ने चालुक्य आधिपत्य को त्यागे बिना वहां अपना प्रभाव जमा लिया।

यह होयसल ही थे जिन्होंने तारकीय योजनाओं को बड़े पैमाने पर अपनाया और लोकप्रिय बनाया। उन्होंने तारकीय आकृतियों के साथ और भी अन्वेषण किया और कुछ ऐसे जोड़ पेश किए जिससे दीवारों की अकॉर्डियन तह (समान आकार के कई पैनल बनाने के लिए वैकल्पिक फोल्ड की एक श्रृंखला का उपयोग करता है) बढ़ गई।

मंदिरो के वास्तुशिल्प की जादूगरी और उसमे अध्यात्म का मिश्रण दक्षिण भारत के मंदिरो की खासियत रही है और हज़ारो वर्ष पहले के यह मंदिर हमे आज भी विस्मृत करता है।

1890 में मैसूर सरकार द्वारा मंदिर की आंशिक मरम्मत की गई थी।







"" मैसूर से तलकाडू का सफर एक घंटे का और तक़रीबन 48 किलोमीटर है।

तलकाडू , एक रानी की शाप की कहानी और वेधेश्वर मंदिर का इतिहास

"" कहानी 1612 में शुरू होती है , जब राजा वोडेयार ने बीमार तिरुमलाराजा को गद्दी से उतारकर मैसूर पर, जो उस समय विजयनगर साम्राज्य के अधीन था, कब्ज़ा कर लिया।

सत्ता परिवर्तन के बाद, तिरुमलाराजा की पत्नी अलामेलम्मा सभी शाही आभूषण ले गईं और पास के क्षेत्र तलकाडु में भाग गईं। इतिहासकारों के अनुसार, अलमेलम्मा इस बात से परेशान थी कि उसके पति को शासक की कुर्सी से बेदखल कर दिया गया था।

ऐसा कहा जाता है कि जब अलमेलम्मा नदी में डूब के आत्महत्या की तब मरने से पहलेउसने श्राप देते हुए कहा, 'तालाकाडु को रेत से ढँक दो, मलंगी एक भँवर बन जाओ और मैसूर वाडियार वारिस पैदा करने में असफल हो जाएँ।



सुहासिनी साकिर - संवादाता

"" तब से यह माना जाता है कि एक बार तलकाडु शहर की उपजाऊ भूमि रेगिस्तान बन गई और रेत से ढक गई, उस विशेष बिंदु पर कावेरी नदी ने अचानक भँवर विकसित कर लिया और मैसूर शाही परिवार वारिस पैदा करने के लिए प्रभावित हो गया। वेधेश्वर मंदिर भी इसी दौरान रेट के निचे समा गया था और फिर 400 साल बादखुदाई के बाद इसको वापस बहाल किया गया।

। तलकाड , जो दलवानपुर के नाम से जाना जाता है , जिसे संस्कृत में गाजरण्या कहते है।गंग - वंश की राज्यधानी थी। इसका शासन गंगवाड़ी के अधीन वर्तमान मैसूर , मंडया, हसन , बेंगलुरु और कोलर जिलों पर चौथी से दसवीं सदी तक रहा।गंग शासको पर इसके बाद चोल वंश , होयसला , विजय नगर , और मैसूर के वोडेयार का शासन रहा। वेधेश्वर मंदिर का परिसर होयसला, चोल और गंग एक मिश्रण है। जिसका शासन दसवीं से चौदवी सदी तक रहा। मंदिर में एक गर्भगृह , एक अंतराल, एक अर्ध मंडप , खम्भों पर खड़ा एक अर्ध मंडप है , जिसमे प्रवेश द्वार के पास ओसारा या पूर्व से पश्चिम की और एक मुखमंडप है। मंदिर के दक्षिण दिशा में भी एक मुखमंडप है। उत्तर दिशा में बना महा मंडप में भजन कीर्तन हेतु एक अतिरिक्त देवालय है। उत्तर पश्चिम में एक देवी की प्रतिमा है। मुख्या देवालय के पीछे एक पंचलिंग उपदेवालय है। मंदिर को एक जगती के ऊपर बनाया गया है। इसकी दीवारों में विशाल खम्भे लगे हुए है जिन पर शैव्या आस्था के विभिन्न देवी देवताओ के मुर्तिया बनी हुई है। गर्भगृह के ऊपर चुना और पत्थर से बना वेसरा शिखर है। नवरंग में छह मुख्य खम्भे है। नवरंग के दरवाज़े पर होयसला की कलाकृतिया बनी हुई है और दोनों तरफ दो मीटर ऊंची द्वारपाल भी बनाये गए है । मंदिर के अंदर काफी खुला जगह है , जहा छोटे छोटे देवालयों में गंग , होयसला और विजयनगर काल की मुर्तिया रखी गई है। वेधेश्वर लिंग के प्रति लोगो में अपर श्रद्धा है। मुख्या प्रवेश द्वार काफी ऊचा है जिसे काफी खूबसूरती से सजाया गया है।

पशुओ को गोद ले , मैसूरु चिड़ियाघर की अनोखी योज़ना



गणेश और तेजस - संवादाता

मैसूर चिड़ियाघर ने पशु प्रेमियों के लिए संरक्षण प्रयासों में हाथ बंटाने के लिए वर्ष 2001-2002 में चिड़ियाघर के जानवरों को गोद लेने नामक एक अनोखी योजना शुरू की। आज तक चिड़ियाघर इस विरासत को जानवरों के कल्याण के लिए एक नेक काम के रूप में आगे बढ़ा रहा है।

वर्मीकम्पोस्ट, केंचुओं का उपयोग करके कार्बनिक पदार्थों को पोषक तत्वों से भरपूर खाद में पुनर्चक्रित करने की प्रक्रिया है। मैसूर चिड़ियाघर वर्ष 2005-2006 में टिकाऊ ठोस कचरा प्रबंधन के विचार के साथ आया और सब्जी, रसोई के कचरे, गिरी हुई पत्तियों और एकत्रित अन्य जैविक कचरे हर साल एक टन वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन शुरू किया। मैसूरु चिड़ियाघर वर्मीकम्पोस्ट इकाई को सफलतापूर्वक स्थापित करने और चलाने वाला देश भर में पहला चिड़ियाघर है और हर साल 80 टन तक खाद का उत्पादन करने में सक्षम है। खाद को पैक किया जाता है और जनता को 10 रुपये में बेचा जाता है। इसका उपयोग चिड़ियाघर परिसर में उगाए गए लगभग 9000 से 10000 पौधों के लिए उर्वरक के रूप में किया जा रहा है।









प्रेम की दास्तान कहती मांडू का किला

मांडू, जिसे मांडवगढ़ या मांडवगढ़ के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन किलेबंद शहर है, जो अपने ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य वैभव के लिए प्रसिद्ध है। मध्ययुगीन काल के दौरान मांडू मालवा क्षेत्र की राजधानी के रूप में कार्य करता था, विशेष रूप से परमार वंश और बाद में मालवा सल्तनत के शासन के दौरान।

.

यह शहर एक पहाड़ी पर स्थित है जो समुद्र तल से 633 मीटर ऊपर है और बहुत ही आकर्षक प्राकृतिक दृश्यों से संपन्न है, जो बारिश के मौसम में सबसे अच्छा दिखाई देता है। इंदौर से मांडू की दुरी नब्बे किलोमीटर है और यह सफर दो घंटे में पूरी होती है।

मांडू का सबसे पहला संदर्भ एक संस्कृत शिलालेख में मिलता है, जब इसे मंडप-दुर्गा कहा जाता था। यह शिलालेख, आदिनाथ की एक जैन छवि के आधार पर, विक्रम संवत 612 (555 सीई) का है और तालापुर में पाया गया था। इसमें कहा गया है कि यह प्रतिमा मंडप-दुर्गा के अंदर तारापुर नामक इलाके में पार्श्वनाथ के एक मंदिर में चंद्रसिम्हा शा नामक एक व्यापारी द्वारा स्थापित की गई थी। प्रसिद्ध मुहम्मद इतिहासकार फ़रिश्ता ने एक किंवदंती का हवाला देते हुए कहा है कि खुसरो परविज़ (590-628 ई.पू.) के दिनों में किला 'बिस जनजाति के आनंद देव राजपूत' द्वारा बनाया गया था, एक ऐसा नाम जो ऐतिहासिक हस्तियों के बीच नहीं मिलता है। हालाँकि, पूर्व शिलालेख इस बात की पुष्टि करता है कि उस समय वहाँ एक किला मौजूद रहा होगा और इसका निर्माण 555 ई.पू. से कुछ समय पहले हुआ होगा। मंडप-दुर्गा का प्राकृत या स्थानीय समकक्ष मांडव है, एक नाम जो अभी भी उपयोग में है। माण्डव शब्द का अपभ्रंश माण्डु हो गया है।







इस क्षेत्र के बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं, लेकिन सबसे दिलचस्प रानी रूपमती और बाज बहादुर की प्रेम कहानी है। वह मालवा का राजा था और एक प्रसिद्ध संगीतकार था। रानी रूपमती एक कवयित्री थीं और अपनी सुरीली आवाज़ और अविश्वसनीय सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थीं। किंवदंती है कि एक बार उनका गाना सुनकर बाज बहादुर को उनसे प्यार हो गया और उन्होंने उन्हें मांडू चलने के लिए कहा। वह इस शर्त पर महल में आने को तैयार हुई कि उसे प्रतिदिन नदी को देखने और उसकी पूजा करने की अनुमति दी जाएगी। रानी रूपमती का मंडप बनाया गया और यह आज भी खूबसूरती से खड़ा है। यह सब एक अनुष्ठान के साथ शुरू हुआ। रानी ने अपना रात भर का उपवास तोड़ने से पहले पवित्र नर्मदा नदी को देखने की दैनिक परंपरा का पालन किया। हालाँकि, उसका वैवाहिक घर पवित्र नदी के करीब नहीं था,

मांडू में घूमने लायक शीर्ष स्थानों (या खंडहरों) पर एक नजर डालें

जहाज महल : यह खंडहर दो झीलों से घिरा हुआ है और मानसून के दौरान, जब पानी लबालब भर जाता है; ऐसा प्रतीत होता है मानो इमारत पानी पर तैर रही हो।

मांडू की जल प्रबंधन प्रणाली: जहाज महल में और भी बहुत कुछ है। एक अद्भुत जल प्रबंधन प्रणाली! महल की दीवारों से होकर गुजरने वाली सर्पिल लकीरें हैं जो पूल के लिए पाइप के रूप में काम करती थीं और पानी के प्रवाह को फ़िल्टर करने और निगरानी करने के लिए रेत से कभी भरी हुई थीं।

बाज बहादुर का महल: पहाड़ी की ढलान पर स्थित यह महल एक विशाल खुला दरबार है जिसमें चारों तरफ हॉल और कमरे हैं और इसके बीच में एक सुंदर तालाब है।

रेवा कुंड और रूपमती महल: रेवा कुंड रूपमती के लिए बाज बहादुर द्वारा बनवाया गया एक जलाशय है। यह रूपमती के महल को पानी की आपूर्ति करने के लिए एक जलकुंड से सुसज्जित है। रानी रूपमती का मंडप एक सेना अवलोकन चौकी के रूप में बनाया गया था, लेकिन इसका उपयोग रूपमती के विश्राम स्थल के रूप में अधिक किया जाता था।

मंदिरो का भव्य इतिहास



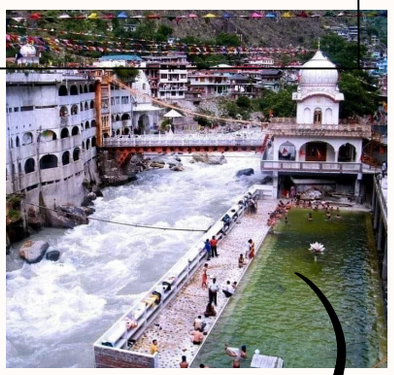
चेतन वढेर



तनाह लोटमंदिर, इंडोनेशिया,
तनाहलोट मंदिर बाली के सबसेमहत्वपूर्ण स्थलों में से एकहै, जो अपनी अनूठीवास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्धहै। लहरोंके बीच एक चट्टानके शीर्ष पर स्थित यह एकप्राचीन हिंदू मंदिर है , : तनाह लोट मंदिरबाली के अविस्मरणीय प्रतीकोंमें से एक है।



भोपाल के हलचल भरे शहर से केवल 35 किलोमीटर दूर और भोजपुर के प्रसिद्ध, अभी तक अधूरे, शिव मंदिर से केवल 6 किलोमीटर दूर, आशापुरी अपनी मिट्टी में अंकित प्राचीन विरासत के प्रमाण के रूप में खड़ा है। इसके मूल में, आशापुरी प्राचीन में मंदिरों का समावेश है, जिसमें वर्तमान में सूर्य मंदिर का पुनर्निर्माण भी शामिल है - इसके पत्थर सदियों पहले की कहानियों को फुसफुसाते हैं। आज, इतिहास के अध्यायों के खुलने के बीच, यह मंदिर पुनर्जन्म के दौर से गुजर रहा है,



मणिकरण भोलेनाथ मंदिर ,
कुल्लू जिला के पार्वती घाटी में स्थित है। भोलेनाथ मंदिर ,



मध्यप्रदेश के ओरछा का राम राजा मंदिर, वह स्थान जहाँ भगवान श्रीराम को राजा के रूप में पूजा जाता है! मंदिर का आकर्षक इतिहास 16 वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व में रानी की गहन भक्ति के रूप में वापस आता है। जब चतुर्भुज मंदिर अपने अंतिम चरण से गुजर रहा था, रानी ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में पवित्र सरयू नदी से भगवान श्री राम की एक मूर्ति प्राप्त की। उस समय मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा था जिसके कारण रानी ने रातभर मूर्ति को महल की रसोई में रख दिया। चमत्कारिक रूप से, अगले दिन, भगवान राम ने उस स्थान से हटने से इनकार कर दिया, जिससे महल को एक दिव्य मंदिर में बदल दिया गया।





श्री बज्रेश्वरी जी माता मंदिर
दुनिया को नष्ट करने से रोकने के लिए भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया। इस स्थान पर सती का बायाँ स्तन गिरा था, इस प्रकार यह शक्ति पीठ बन गया। मूल मंदिर महाभारत के समय पांडवों द्वारा बनाया गया था।

नंजुंदेश्वर मंदिर 🛕
नंजुंदेश्वर मंदिर जिसे श्रीकांतेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, मैसूर जिले में स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव की पूजा के लिए समर्पित है। यह कपिला नदी के तट के पास स्थित है।

कलकत्ता से दार्जिलिंग:
पश्चिम बंगाल में घूमने लायक 10 जगहें



गौर कंजीलाल



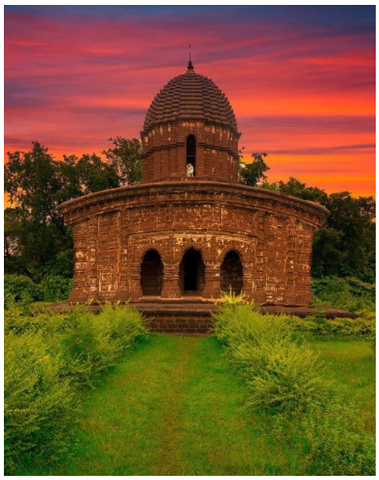
कोलकाता - औपनिवेशिक भव्यता का शहर

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता एक जीवंत महानगर है जो ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुकला के अवशेषों और एक संपन्न बौद्धिक और कलात्मक दृश्य को प्रदर्शित करता है। प्रतिष्ठित विक्टोरिया मेमोरियल, अपने शानदार सफेद संगमरमर के वास्तुश्लिप के जाना जाता है । हावड़ा ब्रिज, कोलकाता को उसके जुड़वां शहर हावड़ा से जोड़ता है, भारतीय संग्रहालय, भारत के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है, जिसमें कलाकृतियों का एक विशाल संग्रह है जो क्षेत्र के समृद्ध इतिहास को दर्शाता है। देवी काली को समर्पित दक्षिणेश्वर काली मंदिर की यात्रा एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करती है।



शांतिनिकेतन - कला और संस्कृति का निवास

प्रतिष्ठित कवि और दार्शनिक रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन एक शांत शहर है जो अपनी कलात्मक और बौद्धिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। टैगोर द्वारा स्थापित विश्व भारती विश्वविद्यालय सीखने और रचनात्मकता का केंद्र है जो दुनिया भर से छात्रों और विद्वानों को आकर्षित करता है। टैगोर का आश्रम, जिसे "शांतिनिकेतन" के नाम से जाना जाता है, कवि की विरासत को संरक्षित करता है ।वार्षिक पौष मेला उत्सव, बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है जो इस क्षेत्र की जीवंत कला, संस्कृति और संगीत को प्रदर्शित करता है, ।



बिष्णुपुर - एक टेराकोटा चमत्कार

बिष्णुपुर, पश्चिम बंगाल का एक ऐतिहासिक शहर, अपने उत्कृष्ट टेराकोटा मंदिरों और जटिल शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है। रासमंच, एक अद्वितीय पिरामिडनुमा मंदिर संरचना, एक प्रमुख मील का पत्थर है। जोर बांग्ला मंदिर और मदन मोहन मंदिर टेराकोटा वास्तुकला के अन्य उल्लेखनीय उदाहरण हैं। इन मंदिरों को सुशोभित करने वाली जटिल नक्काशी और कलाकृतिबिष्णुपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का आइना है । टेराकोटा संग्रहालय शहर की कलात्मक परंपराओं के बारे में और अधिक जानकारी प्रदान करता है, जो बिष्णुपुर को कला और वास्तुकला के प्रति उत्साही लोगों के लिए एक मनोरम गंतव्य बनाता है।



- दीघा - शांत समुद्र तट आनंद

बंगाल की खाड़ी पर स्थित, दीघा पश्चिम बंगाल में एक लोकप्रिय समुद्र तट गंतव्य है। रेतीले समुद्र तटों का लंबा विस्तार, कैसुरीना पेड़ों से घिरा हुआ, धूप की तलाश करने वालों और प्रकृति प्रेमियों के लिए शांति प्रदान करता है। शांत पानी तैराकी और जल क्रीड़ाओं के अवसर प्रदान करता है, जबकि मछवारे गाँव के स्थानीय जीवन शैली की झलक देते हैं। समुद्र के ऊपर सूर्योदय और सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखना एक अविस्मरणीय अनुभव है, जो शांति और विस्मय की भावना पैदा करता है।

- मुर्शिदाबाद - एक ऐतिहासिक रत्न

मुर्शिदाबाद, गंगा नदी के तट पर स्थित, इतिहास में डूबा हुआ एक शहर है। यह कभी बंगाल के नवाबों के अधीन बंगाल की राजधानी थी। अपने हजारों दरवाजों वाला शानदार हज़ार्डुआरी महल एक प्रमुख आकर्षण है और बीते युग की भव्यता को प्रदर्शित करता है। निज़ामत इमामबाड़ा, कटरा मस्जिद और सुंदर हजारदुआरी गार्डन देखने लायक अन्य उल्लेखनीय स्थल हैं। अपने आप को मुर्शिदाबाद की समृद्ध विरासत और स्थापत्य वैभव क्षेत्र के गौरवशाली अतीत की झलक पेश करता है।



पूर्वी भारत में स्थित पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य है जो समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्थलों और लुभावनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। कोलकाता की हलचल भरी सड़कों से लेकर दार्जिलिंग के शांत चाय बागानों तक, पश्चिम बंगाल विविध प्रकार के अनुभव प्रदान करता है जो यात्रियों पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। पश्चिम बंगाल अपने ऐतिहासिक स्थलों, सांस्कृतिक खजाने और प्राकृतिक चमत्कारों के माध्यम से एक समृद्ध यात्रा प्रदान करता है। चाहे आप कोलकाता के औपनिवेशिक वैभव का अन्वेषण करें, दार्जिलिंग की शांति में डूब जाएं, या सुंदरबन की प्राकृतिक सुंदरता को देखें, प्रत्येक गंतव्य अद्वितीय अनुभव प्रकट करता है। शहर की हलचल भरी सड़कों से लेकर शांत चाय के बागानों और घने मैंग्रोव जंगलों तक, पश्चिम बंगाल अपनी विरासत और प्रकृति के उल्लेखनीय मिश्रण से यात्रियों को आकर्षित करता है। ।

दार्जिलिंग - हिमालयी स्वर्ग का एक टुकड़ा

दार्जिलिंग - हिमालयी स्वर्ग का एक टुकड़ा
राजसी हिमालय की तलहटी के बीच स्थित, दार्जिलिंग एक सुरम्य हिल स्टेशन है जो अपने विश्व प्रसिद्ध चाय बागानों और दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी माउंट कंचनजंगा के लुभावने दृश्यों के लिए जाना जाता है। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है और जिसे प्यार से "टॉय ट्रेन" कहा जाता है, पर सवारी एक पुरानी यादों वाली यात्रा है जो पहाड़ों और गांवों के मनोरम दृश्य पेश करती है। टाइगर हिल से सूर्योदय का दृश्य एक मनमोहक दृश्य है, जहाँ सूरज की पहली किरणें बर्फ से ढकी चोटियों को सोने और गुलाबी रंग में रंग देती हैं। बतासिया लूप की खोज और हैप्पी वैली टी एस्टेट का दौरा भी लोकप्रिय आकर्षण हैं।





सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान - प्रकृति का रहस्यमय स्वर्ग

-यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध, सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान एक अद्वितीय मैंग्रोव वन है जो पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश तक फैला हुआ है। यह विविध प्रकार की वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ राजसी रॉयल बंगाल टाइगर्स का भी घर है। जलमार्गों के जटिल नेटवर्क के माध्यम से एक रोमांचक नाव सफारी आगंतुकों को समृद्ध जैव विविधता को करीब से देखने का मौका देता है। भाग्य नेसाथ दिया तो , आप मायावी बाघों, धूप सेंकते मगरमच्छों और जीवंत पक्षी जीवन की एक झलक पा सकते हैं।

कलिम्पोंग - पहाड़ियों में शांति

दार्जिलिंग जिले की सुरम्य पहाड़ियों के बीच स्थित, कलिम्पोंग एक शांत स्थान है जो अपनी सुखद जलवायु और मनमोहक दृश्यों के लिए जाना जाता है। डेओलो हिल और डुरपिन दारा मनोरम दृश्य आपको मंत्रमुग्ध कर देने वाले हैं। जांग ढोक पालरी मठ, अपनी सुंदर वास्तुकला और शांत वातावरण के साथ, एक आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। मॉर्गन हाउस के औपनिवेशिक आकर्षण का अन्वेषण करें, यह एक विरासत संपत्ति है जो क्षेत्र के औपनिवेशिक अतीत को दर्शाती है। कलिम्पोंग आगंतुकों को अपने शांत वातावरण के बीच आराम करने और हिमालय की सुंदरता की खोज करने के लिए आमंत्रित करता है।

गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान - वन्यजीव वंडरलैंड



जलदापारा वन्यजीव अभयारण्य

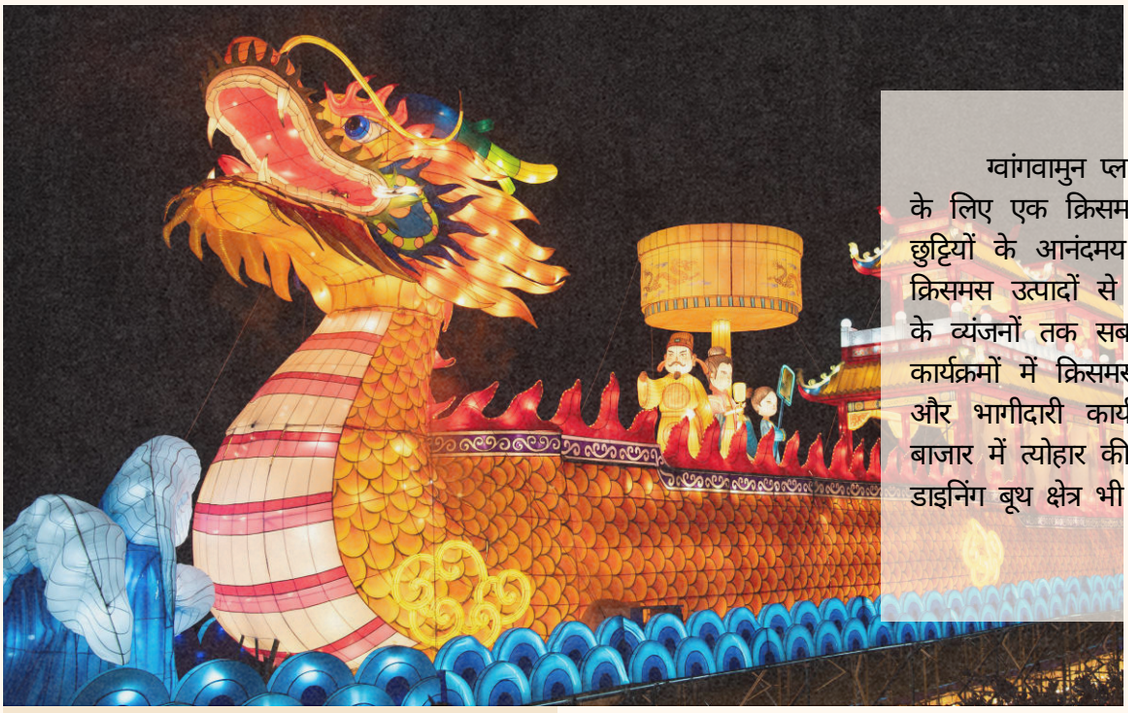
जलदापारा वन्यजीव अभयारण्य, भारतीय एक सींग वाले गैंडों की आबादी के लिए प्रसिद्ध है। अपने प्राकृतिक आवास में इन राजसी प्राणियों की एक झलक पाने के लिए, जीप या हाथी से एक रोमांचक वन्यजीव सफारी पर निकलें।

पश्चिम बंगाल के डुआर्स क्षेत्र में स्थित गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान वन्यजीव प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है। पार्क में हरे-भरे जंगल, चमकती नदियाँ और वन्य जीवन की समृद्ध विविधता है। हाथी, भारतीय एक सींग वाले गैंडे और हिरण की विभिन्न प्रजातियों जैसे शानदार जीवों को देखने के लिए रोमांचकारी जीप सफारी और हाथी की सवारी पर जाएँ। गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान भी पक्षी प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है, जिसमें पक्षी प्रजातियों की विस्तृत श्रृंखला है। इस वन्यजीव अभयारण्य की अदम्य सुंदरता में डूब जाएँ और प्रकृति के चमत्कारों की खोज करें।

सियोल लैंटर्न फेस्टिवल, सियोल का मुख्य शीतकालीन त्योहार



15 दिसंबर, 2023 से 21 जनवरी, 2024 तक आयोजित किया गया । इस साल त्योहार का 15वां वर्ष था , और पहली बार ग्वांगह्वामुन प्लाजा और सियोल प्लाजा को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया गया । , जिससे यह अब तक का सबसे बड़ा हो गया है!
इस वर्ष की थीम "व्हाइट नाइट इन सियोल" है और इसमें हांजी (पारंपरिक कोरियाई कागज) से बने एलईडी लालटेन, हवा के गुब्बारे, गतिज कला और मजेदार प्रकाश डिस्प्ले शामिल रहे । चूंकि 2024 ड्रैगन का वर्ष है, इसलिए विशेष प्रदर्शन ड्रेगन पर केंद्रित रहा , जिसमें ग्वांगवामुन प्लाजा में एक बड़ा नीला ड्रैगन और चेओंगगीचेओन स्ट्रीम में "व्हाइट ड्रैगन" प्रदर्शन शामिल हुए ।



ग्वांगवामुन प्लाजा मार्केट स्थानीय छोटे व्यवसायों के लिए एक क्रिसमस बाजार है। विक्रेताओं के पास छुट्टियों के आनंदमय मौसम का आनंद लेने के लिए क्रिसमस उत्पादों से लेकर शिल्प वस्तुओं और सर्दियों के व्यंजनों तक सब कुछ यहाँ उपलब्ध रहा । अन्य कार्यक्रमों में क्रिसमस और नए साल के फोटो ज़ोन और भागीदारी कार्यक्रम शामिल थे । इस वर्ष के बाजार में त्योहार की अवधि के दौरान खाद्य ट्रक और डाइनिंग बूथ क्षेत्र भी शामिल हुए ।

तस्वीरो में क़ैद कुछ यादगार पल



मध्य प्रदेश पर्यटन और पुरातत्व विभाग की पूरी टीम के साथ स्टेट म्यूजियम के प्रांगण में। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में इसी टीम का मुख्य सहयोग रहा और पुरे टीम को दिल से धन्यवाद।
विश्वदीप रॉय चौधुरी



मेरे अज़ीज़ मित्र श्री चारुदत्त रणदिवे ,जो भारत के सबसे नामचीन सम्मोहन विशेषज्ञ है के संग कोल्हापुर में श्री छत्रपति साहू संग्रहालय देखने के समय का चित्र।
विश्वदीप रॉयचौधुरी - संपादक



नागपुर में छोटी लाइन की रेल का संग्रहालय में बिताये यादगार पल। यह इंजन भारत का सबसे पुराना इंजन है और यह वर्ष १९३५ से भी पहले का है जिस समय कोयले से हमारी रेलगाड़ी दौरा करती थी। नागपुर आये तो इस संग्रहालय में अवशय आयेऔर बच्चो को खास कर के।
सुहासिनी साकिर - संवादाता



मुंबई के ताज होटल में CII द्वारा आयोजित पर्यटन सम्मलेन में मुझे स्वाद हिन्दुस्थान को करीब से महसूस करने के अवसर प्राप्त हुआ। तस्वीर में आप मुझे बंगाली व्यंजन के शेफ के साथ देख सकते है।
सुहासिनी साकिर - संवादाता



क्या आप नागपुर में कुछ चटपटा , लज़ीज़, और देसी नागपुरी पकवान खाना चाहते है तो चटोरी स्ट्रीट आ जाइये , कहा है यह , गूगल में बस चटोरी स्ट्रीट टाइप किये , मैप के साथ रास्ता अपने आप पता चल जायेगा।
सुहासिनी साकिर - संवादाता

इजारा

महिलाओ द्वारा संचालित भोजनालय

— OUR PRESENCE —

Mumbai | Delhi | Dehradun
Valsad | Amravati | Lucknow
Thane | Dist Palghar | Prayagraj
Chennai

हम है इजारा,
हमारे साथ कीजीये स्वाद से परिचय

BOLLYWOOD
FIRST ALL
WOMEN
CATERING SERVICE



A project to empower underprivileged WOMEN

A social cause Initiative by
Will India Change Foundation

Visit us at
www.willindiachange.org

WILL INDIA CHANGE FOUNDATION

• CONTACT US •

Project Head/Catering
SUHASINI SAKIR
+91 77589 68909

Project Head/New Mumbai
BIDDISHA MUKHOPADHYA
+91 98690 51721

Project Coordinator/Vidarbha Region
MADHURI SUDHA
+91 93716 71707

For any kind of query whats app at +91 99712 29644

ADDRESS : B 121, 2nd Floor, Green Field Colony, Faridabad, Haryana 121001